

ASHA ARCHIVES

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

1.355

ASHA ARCHIVES

श्रीनारायणमिहिरुलि ॥



(उद्यमानाय नमः ॥

[illegible]

नमः कुरुताये श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ **ॐ** नमो भगवते वासुदेवाय ॥ **ॐ** नमो भगवते वासुदेवाय ॥ **ॐ** नमो भगवते वासुदेवाय ॥
माया वमः ॥ **ॐ** नीलमस्तु श्रीनमिकाय ॥ **ॐ** महायत्रिप्रकृतिरुकोशी
वोमः ॥ **ॐ** धिग्यायजुह्वनमस्तु ॥ **ॐ** नमो भगवते वासुदेवाय ॥ **ॐ** नमो भगवते वासुदेवाय ॥
कुरुताये रुदयाय नमः ॥ **ॐ** नमो भगवते वासुदेवाय ॥ **ॐ** नमो भगवते वासुदेवाय ॥ **ॐ** नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ **ॐ** नीलमस्तु श्रीनमिकाय ॥ **ॐ** महायत्रिप्रकृतिरुकोशी ॥ **ॐ** धिग्यायजुह्वनमस्तु ॥ **ॐ** नमो भगवते वासुदेवाय ॥

गगनकुरुताये नमः ॥ **ॐ** नमो भगवते वासुदेवाय ॥ **ॐ** नमो भगवते वासुदेवाय ॥ **ॐ** नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ यतः ॥ श्रीवाक् ॥ ॥ यतः ॥ श्रीवाक् ॥ ॥ यतः ॥ श्रीवाक् ॥ ॥ यतः ॥ श्रीवाक् ॥ ॥ यतः ॥ श्रीवाक् ॥
विमलं विकटदुःखीमही नाना नीलमस्तु श्रीनमिकाय ॥ **ॐ** नमो भगवते वासुदेवाय ॥ **ॐ** नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ यतः ॥ **ॐ** नमो भगवते वासुदेवाय ॥ **ॐ** नमो भगवते वासुदेवाय ॥ **ॐ** नमो भगवते वासुदेवाय ॥ **ॐ** नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ यतः ॥ श्रीवाक् ॥ ॥ यतः ॥ श्रीवाक् ॥ ॥ यतः ॥ श्रीवाक् ॥ ॥ यतः ॥ श्रीवाक् ॥ ॥ यतः ॥ श्रीवाक् ॥

मूलनमस्तस्युता ॥ ॥ श्रीसंस्तुतस्तुवाङ् ॥ प्रियवयागिति ॥ चमर्तः
वलि ॥ श्रीवाङ् ॥ स्वस्वमुद्रा ॥ ॥ नमोय्योयुता ॥ श्रीधामशक्त्यादि ॥ नमः
सनाथपादकी ॥ ध्यान ॥ ॐ प्रयातीरयदार्थिनी दक्षिणवर्गधावाहसावः
वीर्यवर्गदीवर्गकलीकथनमुद्रा द्रुकाववीआहवी ॥ स्वर्वातीलविश्ववयिम्
नयुगाकगायतायेयुगायाश्चन्यकयालकचक्रगनीहृद्युगनावाहय ॥

[illegible]

सुन ॥ सिद्ध ॥ भादनी ॥ मूक ॥ वरु ॥ मूलका ॥ एम मूल नदशा ॥
पीमनी तस नखनी धवनाथ वरु पूषीयनी कर्दूरु ह्वाहा ॥ पूषा ॥ मूल न
शिभायुजथ ॥ ददयादि ॥ मूहा मा नरु ॥ दधसि रकि सुनरु यत्रिवा
नसमनिग ॥ जावहीयुज शिआमि गावहीरु कि नरु व ॥ ॥ गमा धत्रि
वा नयुजा ॥ कग न वरु कन युजथ ॥ एकजटा दध वरु पूषीयनी कर्दूरु

रुद्र ह्वाहा ॥ मूहा ॥ एव कमत ॥ नात्रिती दध वरु पूषीयनी कर्दूरु ॥
मनी ॥ वडाद काथ वरु पूषीयनी कर्दूरु ॥ नमनी ॥ दयजटाथ वरु पूषी
यनी कर्दूरु ॥ वायु ॥ महायत्रि स न वरु पूषीयनी कर्दूरु ॥ वरुदि
॥ यि मयजटाथ वरु पूषीयनी कर्दूरु ॥ म (मूल नदशा मो लो ॥ ॥ दशा
वायु शादीय यथर्क ॥ उ नूय कि युजथ ॥ ॐ उ द कग न नद नाथ वरु पूषीयनी

कईरुद्र॥ॐ शानकशानन्दनाथयादूकीयूजयामि॥ॐ बीनकशानन्दनाथया
दूकीयूजयामि॥ॐ नीरु कषातन्दनाथयादूकीयूजयामि॥ॐ वृषध्वजातन्द
नाथयादूकीयूजयामि॥ॐ निदिद्योद्य॥ ॥ॐ वमिषातन्दनाथयादूकी
॥ॐ कूर्मातन्दनाथयादूकी॥ॐ मीननाथतन्दनाथयादूकी॥ॐ महेश्वरानन्द
नाथयादूकी॥ॐ हनिषतन्दनाथयादूकी॥ॐ निसिद्धोद्य॥ ॥ॐ नात्राद

शेवकयूषीयनीकईरुद्र॥ॐ शानुमगीदशेवकयूषीयनीकईरुद्र॥ॐ ज्या
दशेवकयूषीयनीकईरुद्र॥ॐ महादनीदशेवकयूषीयनीकईरुद्र॥ॐ मः
हेश्वरीदशेवकयूषीयनीकईरुद्र॥ ॥ॐ सुखानन्दनाथयवकयूषीयनी
कईरुद्रखाहा॥ॐ यवानन्दनाथयवकयूषीयनीकईरुद्रखाहा॥ॐ यानि
जानानन्दनाथयवकयूषीयनीकईरुद्रखाहा॥ॐ कृत्यवानन्दनाथयव

कृष्णाय नमः ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥ ॐ ब्रह्मणे नमः ॥ ॐ ईश्वर्ययमीक ईरु
इत्याहा ॥ ॐ मिमा नीय ॥ ॥ ॐ वं वेमा च नाथ वज्रयुष्मिणीक ईरु
हा ॥ पूर्व ॥ ॐ गं गीरया नाथ वज्रयुष्मिणीक ईरु इत्याहा ॥ दक्षिण ॥ ॐ यं
मना राय वज्रयुष्मिणीक ईरु इत्याहा ॥ यक्षि म ॥ ॐ मू मिमा राय वज्रयुष्मि
यमीक ईरु इत्याहा ॥ उरु न ॥ ॐ मयादि, गीम ना नी, वामा वरु न

॥ ॐ नं नाम कार्ये वज्रयुष्मिणीक ईरु इत्याहा ॥ ॐ मं माम कार्ये वज्रयु
ष्मिणीक ईरु इत्याहा ॥ ॐ यं या छलाय वज्रयुष्मिणीक ईरु इत्याहा ॥ ॐ गं
नामि कार्ये वज्रयुष्मिणीक ईरु इत्याहा ॥ ॥ ॐ यं यमा रु कार्ये वज्रयुष्मि
यमीक ईरु इत्याहा ॥ ॐ यं यमा रु कार्ये वज्रयुष्मिणीक ईरु इत्याहा ॥ ॐ वं
विष्णवे नमः ॥ ॐ नं नना रु कार्ये वज्रयुष्मिणी

ॐ ह्रीं रुद्र स्वाहा ॥

॥ गंगा मधु मूल दवी वृजयम् ॥

ॐ ह्रीं मूर्तिं रुद्र उग्र

गानादशं वक्रयुष्मिन्पादकी ॥ शिवा ॥ वक्रयु ॥ वलि ॥

॥ ह्रीं मूर्तिं रुद्र उग्र

जटादशं वक्रयुष्मिन्पादकी ॥ शिवा ॥ वलि ॥ ॥ ह्रीं मूर्तिं रुद्र नीलसनः ॥

स्वामीदशं वक्रयुष्मिन्पादकी ॥ शिवा ॥ वक्रयु ॥ वलि ॥ ॥ मूल

नमस्तस्य ॥ वलि ॥

॥ पुनर्वलि मन्त्र ॥ श्रीगणेश ॥ ॐ ह्रीं रुद्र उग्र हि द विष्णु

वद्रु क नाथ कथिन्नजटा रानरासून शिन्नय काला मूरु सर्वविद्या नागय २ स

व्रियेत्ता लसहि न ॥ मीयुजी वलि गुरु २ ह्रीं रुद्र स्वाहा ॥ ॥ नैमल्य गलय

निवलि ॥ ॐ ह्रीं वनद वनद सर्वजन वसमानय सर्वविद्या नागय २ ॥

मीयुजी सर्वयत्ता लसहि न ॥ मीयुजी वलि गुरु २ स्वाहा ॥ ॥ वायुय

यामिनिवलि ॥ ॐ ह्रीं यीयुय २ सर्वसिद्धि शान्ति ॥ मीयुजी वलि गुरु २ स्वाहा

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ कुरुयात्तवलि ॥ ॐ कौंकः कुरुयात्ताय महावलि कयित्तज
 दा रानरासून किनेरु कोलासूय मलियित्तितवलि गृह २ नववृषल
 उव २ मूव २ हन २ दह २ यव २ खख स्वादि २ महादामलाधिकय मवृ ॥
 खन कुरुयात्ताय कामसुवनदाममसाहा ॥ ॥ म (अ) वा मूलावलि ॥ ॐ
 ३ की सर्वविघ्न हनय ३ सर्वहानय ३ मीयूजीवलि गृह २ स्वाहा ॥ ॐ श्रीसिद्धि

वामुआयवलि गृह २ दूरदू स्वाहा ॥ ॥ मूलवलि ॥ ॐ की एकजट महाय
 काधिकय नीवसनस्वमीदय मयायनीर्ग वलि गृह २ गृहायय २ मम सर्व
 गार्कि कुरु २ यवविद्यामाकृष्यभूत २ किन्दि २ सर्वजगद्वगमानय की स्वाहा ॥
 उकावृकयकि शिरु सर्वदुदयायनमः ॥ ॐ ब्रह्मा उमावायादि ॥ ॐ सम
 रुमकुयी ० सिंहासनयी ० यी ० ययी ० कुरुयात्ताय स्वाहा दिव्यसिद्धि स

मयचक्रयाइकी बलिगृह २ साहा ॥ स्वाकमहाबलि ॥ स्वादाक ॥ मूडा ॥ धूप
॥ दीप ॥ नैवेद्य ॥ मूलन साधयित्वा दाययम् ॥ जय ॥ करु ॥ कुरुक ॥ गला
ग ॥ यागिनी ॥ मूलन यथाशक्ति ऊर्ध्वकथाम् ॥ जयसमर्थी ॥ मुक्तातिमु
क्त (मफित्वयादि ॥ ॥ गगनकां ॥ ॐ नमस्तु मधुलाकां लयादि ॥ करुः
या ॥ वदकथा ॥ गलागया ॥ यागिनीया ॥ ऐनवया ॥ ॐ एकदविकटकुह

ध्यानव्यातिहासा नमस्तिनमस्तुमाला मयवर्धुशिखम्बा । कनकनिराकया
लारुक्तकलीचरवर्मी शिखवनवनकागा पादुमांडगनावा ॥ सर्वगि नवीर
वसवसवी श्रीवदयूर्ध्ववयुधामिना । मुक्तायलि धामिनसर्वविद्या रुयाति
रुयाकुवनैकसया ॥ ॐ ध्यानव्यूथमहाना वयादि ॥ नाभलदीयचवना
मूर्धमवमान बुक्तादिदवनिवहनेपिसयमान ॥ चिरकृपासू ननु सर्वजः

ज्ञानकान् नगार्कवाधिनसमासमसर्ववेन ॥ मनुहीनक्रियाहीनं यद्वाहः
 किंविचिर्किंनं । न सर्वदम्यनीद्वी । यसीदयत्रमध्वरी ॥ मृत्पुत्रादि ॥ अ
 समसम्यज्जानूया । मृत्पुत्राजिनसादृशौ । वचसासतमावति । यत्तमासा
 म्नीनितः ॥ मूलनक्रियाज्जलि ॥ नर्थन । यिनपुत्राद्यादि ॥ एकाहक ॥ नम
 स्वामि । मउर्लकृत्वा । उक्तिर्युजीकृत्वा ॥ दिदिन । गकिपूजा ॥ नवयय

२२२ लोभादीन्

हयम् ॥ यथाविधिवत् नर्थनं ॥ आचमनं ॥ द्वादयादि न्यासकृत्वा ॥ दवा
 नीव्राद ॥ वलिविसर्जनं ॥ साक्षीधाय ॥ मृत्पुत्राद्यादि ॥ निवृत्तकर्म
 र्जनं सम्यक् ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगानाधशेनमः॥ उँ धावदूयमहाबाव, सर्वगणकथं कवि । रुक्म्याववद
दवि, ग्राहिमीगननगर्ग ॥ सुनासुनारिभदवि, सिद्धिगन्धर्वसविग । जाश
वायहनदहि, ग्राहिमीगननगर्ग ॥ जगद्गणसमायुक्त, लावजिकावकावि
वि । दुर्गवृद्धिकवदवि, ग्राहिमीगननगर्ग ॥ सोयदूयकोधनूय, वल्लव
यनमासुग । सुखिदूयनमसुख्य, ग्राहिमीगननगर्ग ॥ जजनीजुगमीहीति

रुक्म्याववदवि, ग्राहिमीगननगर्ग ॥ दूदूकावम
यदवि, नविहामयिथनमः । उयगावतमसुख्य, ग्राहिमीगननगर्ग ॥ व
र्द्धिदहि यल्लदहि, कविर्द्धिदहिदहिम । इवृद्धिद्वनमदवि, ग्राहिमीगनन
गर्ग ॥ सुलादिदिविषद्वन्द, वन्दिनकनूधममयी । नागनावाधिनाथस्य, ग्रा
हिमीगननगर्ग ॥ मृदस्याध्वरुद्वर्ग्या, नवम्यायः ४ यः १० ननः ४ । वल्लमसुः ४ ति

द्विमा प्राणि, नाण कार्यादिवान्त ॥ भाकार्यात्तरमभाकार्यं, धनार्थी धनमाप्नुया
 न् । विशार्थी तरु मविशार्थी, नर्क्याकनन्तदिकी ॥ हृदयार्थी य ० हृदय, सगर्भी
 तरुमनन ४ । तस्य गण ४ कर्ययाणि, सहाय ह्यत्रजायम ॥ श्रीजयामयि स्या
 म्, आशयानमथारथ । य ० हृदय ० निस्तार्थी, गुरुं तस्य तर्हीय ४ ॥ हृदि ४
 क्कनाकार्यादिवन्ति नायी ना नदया ह्यार्थी समाकर् ॥ ॥ ॥ ॥

[illegible]

[illegible]

1.355

ASHA ARCHIVES

1.355

ASHA FIVE

कीनगात्यायय ॥ ४ ॥ त्वत्पादाम्बुजसं वयासु कृतिना गक कि सायु ऊर्गा
गह्यथीयत्रमश्वत्रहनिहत्रवस्त्रादिसाम्यात्मकं । संहतानीव द्विसृजुनात्यद्वन
नूदधममूल्यान्मृगान् । मानस्यत्रसविता हिविमूर्खान् किं सन्नधीः सवम
॥ ५ ॥ मानस्यत्रयैकत्रयत्रजा मूढा ककाटीत्रिह । रुध्रवासूत्रसद्वन
विजयिना निःशङ्कसमागता । जेवाहं उवतत्रसन्नमहसाय जीवह नः ॥

ने स्तुतुल्यीति नर्मयथाशुवित्रविनाशवज्जु कि स्वर्य ॥ ६ ॥ त्वन्नामस्मर्त्तो
त्यत्रायद्यत्रादुद्धूतनाशकमुक्तं । रुध्रयत्रयिभस्त्रनाकस गमयकाथनाम
धियाः । दद्यान्तवयूंगवाध्वत्तत्रनाश्यादिकाजकवा । जाकिन्मः कृपि
मानकायमन्त्रजासागः कर्त्तुं न ल ॥ ७ ॥ त्वन्नीसिद्धिगमयथाद्वकम्
स्वाः सिद्धास्तथात्रिहः । नश्वयत्रिहः । जगज्जटास्तुत्तुथाभाहर्त ।

मागस्य यत्र सवयाखतु नृणां सिद्धिर्न भवति ॥ ८ ॥ उद्योगात्मा कर्मिणो रुक्मिणीमायय ॥ ९ ॥
यागम्य आक्रका तत्र यायश्चरित्यग ॥ १० ॥ लक्ष्मकविर्तां दिशी सर्व
मार्गार्थविद्वत् ॥ लक्ष्मीमनसुनाम्याय उक्ताशमनयसिमान ॥ कीर्ति
मार्गिच वदुर्ध्व सर्वमपि यगीरुवत् ॥ विद्यागीर्ध्वे ताकम् यायम्

किमाद्र्याग ॥ रुक्मिणीनीलमलतावाक्कीर्तमार्ग ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ ततो शिखा महा कालयूजा विधि
लिख्यते ॥ ॥ त्रितले नार्चयः ॥ गुरु नमस्कारादि ॥
मासं कुर्यात् ॥ ॐ पञ्चभुक्ताय नमः ॥ ॐ पञ्चकानिष्ठकाय
नमः ॥ ॐ पञ्चोन्ननाम्बिकाय स्वाहा ॥ ॐ पञ्चप्रधे माय
वोषट् ॥ ॐ पञ्चगुणार्जुनाय नमः ॥ ॐ पञ्चोन्ननाय नमः ॥ ॐ पञ्चोन्ननाय नमः ॥

॥ इति करं न्यास ॥ पुनः विलोमेन ॥ हृदयादिष्वङ्गनाम
ॐ उद्भवकाय नमः ॥ ॐ पूर्ववक्त्राय नमः ॥ श्रीदक्षिणवक्त्राय
नमः ॥ ॐ उत्तरवक्त्राय नमः ॥ ॐ पश्चिमवक्त्राय नमः ॥
ॐ ॐ श्रीखुम्भा उद्भवकाय नमः ॥ इति वक्त्रं न्यास ॥ ॐ हृ
दयाय नमः ॥ ॐ शिखा स्वाहा ॥ श्रीशिखाय वोषट् ॥

खुं कवचाय ह ॥ स्तुते नमः त्रयाय वषट् ॥ अं अस्त्रायै ह ॥
इति अं न्यासः ॥ ततो जलयात्र अर्घ्याय पूजाः ॥ भूतशु
द्धि शालपूजा ॥ ततो आसनपूजा ॥ ॐ आदासक्ति कमला
स्माय नमः ॥ ट ॥ महाप्रेतास्त्राय पादुका ॥ ध्यानं ॥ महाप्रे
तसमारुढं रक्त कण्ठसुतेजसं प्रकाशं विलोचनं भी

मं ॥ ववरोद्ध शिरोरुहं ॥ पिनिक्षं भूलसत्के उं महाकायम
होदर व्याघ्रचर्म परिधाना गजचर्मोत्तरीयका ॥ रक्त
घासिलं कारं नौपुशादि विभूषितं ॥ खड्गं हस्तं कथात्राशि
विन्दु खड्गं गेहसंक्रं ॥ विद्युत्कोतिसमाभासं कवचा
हारभूषितं ॥ वस्त्रं विलसुं रेखां ॥ शिरसा पृष्ठ पादु

कां ॥ स्वाशिवाश वकुलकारं ॥ गडो लूकल वाकुलं ॥ भूतये
न पिशाचानां ॥ किं किलाल वसं कुलं ॥ ॥ इमं साने च महाडी
इं योगिनी गरा मराडी तं नृत्यमान माहादेवं लोकानां हि
तकारणी ॥ नमामि श्री महा कालं भैरवं भूवने अं रे यः
पठे शृणुयाद्वा पि शत्रुलोकं विना सनं ॥ सर्वसिद्धि मवा

प्रोति सर्व विजयवर्द्धनं ॥ ॥ इति ध्यान पुष्पं नमः ॥ महा
काल पूजा ॥ ॐ क्रो भू सि तानि महा भैरवाय नमः ॥ ॐ क्रो रु
ह भैरवाय नमः ॥ ॐ क्रो चरा भैरवाय नमः ॥ ॐ क्रो को
ठ भैरवाय नमः ॥ ॐ क्रो उन्मल भैरवाय नमः ॥ ॐ क्रो क
याली स महा भैरवाय नमः ॥ ॐ क्रो भीषण भैरवाय न

म॥ ॐ क्रीं शीहार भैरवाय नमः ॥ ध्वज नवलि ॥ भूद्योरेन
शिखा पूजा ॥ वलि ॥ त्रिधा ॥ लि ॥ प्रद्वौ द्वौ द्वौ शिखा
स्वचन्द्र महाभैरवाय पादुका पूजया मित्र नमः
विधा ३ ॥ षष्ठी ॥ वलि श्री वाज्य ॥ धेनुयो निमुद्रा ॥ ततो
महाकालपूजन ॥ ॐ क्रीं हेतुकक्षेत्रपालाय नमः ॥

ॐ क्रीं विष्णु रत्न कक्षेत्र्यालाये नमः ॥ ॐ क्रीं भृग्वि वे
तालक्षेत्र्यालाये नमः ॥ ॐ क्रीं भृग्वि जिह्वाक्षेत्र्या
लाये नमः ॥ ॐ क्रीं कालाक्षेत्र्यालाये नमः ॥ ॐ क्रीं
करालाक्षेत्र्यालाये नमः ॥ ॐ क्रीं एकपादक्षेत्र्याला
ये नमः ॥ ॐ क्रीं भीमरूपक्षेत्र्यालाये नमः ॥ ॐ क्रीं हातकक्षेत्र्या

पालायेनम ॥ ॐ ह्रीं अचल भैरवाय नम ॥ ॐ ह्रीं दामलक्षे
त्र पालायेनम ॥ ॐ ह्रीं कर्मवृक्षक्षेत्र पालायेनम ॥ ॐ ह्रीं
नवल्लि ॥ ततो यथा मादिन पूजा ॥ ॐ ह्रीं यथा गधत्र पाला
य नम ॥ ॐ ह्रीं वरुणाक्षेत्र पालायेनम ॥ ॐ ह्रीं अट्टल
सक्षेत्र पालायेनम ॥ ॐ ह्रीं जयति पूरक्षेत्र पालाये

नम ॥ ॐ ह्रीं चरित्रक्षेत्र पालायेनमः ॥ ॐ ह्रीं प्रकाशकक्षेत्र
त्र पालायेनमः ॥ ॐ ह्रीं दिवीकोटक्षेत्र पालायेनमः ॥
ॐ ह्रीं नवल्लि ॥ महाप्रताप्ताये पादुका ॥ ॐ ह्रीं महाला
ये पादुका पूजे यामी नमः ॥ वलि ॥ ॐ ह्रीं महाकालाय
सर्वशत्रु प्रमर्दनाय श्री महाकाल भैरवाय पादुका पू

जयामी नमः॥ विधा॥ पुजावलि॥ षष्ठी॥ महाका
लहृदयाय नमः॥ इत्यादि षष्ठांश पुजा॥ मूलेन
सांजीय॥ आवाज्य॥ खर्ज॥ विन्दु॥ मूलादशयेन॥
निर्वाणाय॥ वलिविये॥ चण्डाद्यंतात्पादि॥ वाक्ये
न सह त्याक महावलि नधुनके॥ धूप॥ दिप॥ नैवेद्य

ताम्रूल कर्पू यक्षा माष॥ जप॥ ह्रीं महाकालाय स्वाहा
१०८॥ श्लोक॥ प्रकाशे क॥ पुपि पुजाय भुतव्यस्त
समयदाय॥ देवजपयके॥ दक्षिणादाय॥ चित
स्वनवेले मग्ना महानि॥ त्याजककाय॥ माहिधा
य॥ वाक्य॥ इति महाकालपुजा सद्धति समाप्तम् ॥









